

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे

संस्कृत विशारद (बी.ए.) – नियमित

परीक्षा : जून-जुलै – २०२२

सत्र १ ले

विषय: कुमारसम्भव (19R412)

| दिनांक : २९/०६/२०२२ | गुण : ६० | वेळ : दु. २.०० ते ४.३० |
|-------------------------------------|---|------------------------|
| सूचना : सर्व प्रश्न अनिवार्य | | |
| प्र. १. | द्वयोः अनुवादं लिखत। | (१२) |
| १. | मन्दाकिनीसैकतवेदिकाभिः सा कन्दुकैः कुत्रिमपुत्रकैश्च। रेमे मुहुर्मध्यगता सखीनां क्रीडारसं निर्विशतीव बाल्ये॥ | |
| २. | अकिञ्चनः सन्प्रभवः स सम्पदां त्रिलोकनाथः पितृसद्यगोचरः। स भीमरूपः शिव इत्युदीर्यते न सन्ति याथार्थविदः पिनाकिनः॥ | |
| ३. | निवार्यतामलि किमप्यंबटुः पुनर्विवक्षुः स्फुरितोत्तराधरः। न केवलं यो महतोऽपभाषते शृणाति तस्मादपि यः स पापभाक्॥ | |
| प्र. २. | वाक्यत्रयं ससन्दर्भं स्पष्टीकुरुत। | (१५) |
| १. | श्मशानशूलस्य न यूपसत्क्रिया। | |
| २. | शिरीषपुष्पं न पुनः पतत्रिणः। | |
| ३. | निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः। | |
| ४. | प्रपेदिरे प्राक्तनजन्मविद्याः। | |
| ५. | साधारणो भूषणभूष्यभावः। | |
| प्र. ३. | एकं प्रश्नं सविस्तरम् उत्तरत। | (१५) |
| १. | हिमालयस्य वर्णनम् | २. बटुकृता शिवनिन्दा |
| प्र. ४. | सन्धीन् घटयत / विघटयत | (०६) |
| अ) | | |
| १. | निर्विशतीव। | २. दीपस्त्रिमार्गयेव |
| ४. | पतिः+च | ५. तपोभिः+आत्मनः |
| ३. | मधोर्हि | ६. स्थण्डिले+एव |
| आ) | रूपाणां परिचयं लिखत। | (०६) |
| १. | अपाकरिष्यति | २. अमिमीत |
| ४. | भुङ्क्ते | ५. बभार |
| ३. | इयेष | ६. शिरसां |
| प्र. ५. | समुचितमुत्तरं लिखत। | (०६) |
| १. | येषां न चेतांसि त एव। (रिक्तं स्थानं पूर्यत।) | |
| २. | न अन्विष्यति मृग्यते हि तत् (रिक्तं स्थानं पूर्यत।) | |
| ३. | प्रियेषु सौभाग्यफला हि। (पर्यायं विचिनुत - चारुता, नम्रता, सौन्दर्यम्, सौख्यम्।) | |
| ४. | हिमालयो नाम। (पर्यायं विचिनुत- पर्वतः, नगाधिराजः, नगः, राजा।) | |
| ५. | वर्णी नाम कः? (एकेन वाक्येन उत्तरत।) | |
| ६. | आद्यं धर्मसाधनम् किम्? (एकेन वाक्येन उत्तरत।) | |
